प्रेस-विज्ञप्ति 27-06-15

ओलिंपिक डे सेलिब्रेशन्स के अवसर पर स्पोर्टस् रिट्रीट का आयोजन

चैंपियन बनने के लिए होलिस्टिक डेवलपमेंट ऑफ पर्सनालिटी जरूरी-डा॰ गुरदीप सिंह

सदा सीखने की भावना ही आगे बढ़ाती है- डा॰ सुनीता गोदारा

कार्य के प्रति प्रेम, सम्मान एवं सच्चे समर्पण भाव से मिलती है सफ्लता- बी के आशा दीदी

भगवान ने हमारे अन्दर सारी कलायें दी हैं, लेकिन उनका सही उपयोग हम तभी कर सकते हैं, जब हमारा मन शान्त और एकाग्र हो। किसी भी क्षेत्र में सफ्ल होने के लिए एक परसेन्ट इंस्पिरेशन और 99 परसेन्ट परस्पिरेशन आवश्यक है। उक्त विचार **डा॰ गुरदीप सिंह, सचिव, एसोसियेशन ऑफ ऑल इण्डिया स्पोर्टस् युनिवर्सिटीज ने गुड़गाँव,** ब्रह्माकुमारीज़ के भोड़ाकलाँ स्थित ओम् शान्ति रिट्रीट सेन्टर में ओलिंपिक डे सेलिब्रशन्स के अवसर पर स्पोर्टस् पर्सन्स के लिए आयोजित दो दिवसीय रिट्रीट में ससटैनिंग एक्सीलेंस विषय पर व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि हमें अपनी पॉलिसी को डिजाईन, डेवलप और डिलीवर करना है। भारत में स्पोर्टस् के क्षेत्र में सबसे बड़ी समस्या धन का अभाव है, जिसके कारण हमारे अच्छे-अच्छे प्रतिभाशाली युवा अन्य व्यवसायों से जुड़ जाते हैं। उन्होंने कहा कि चैंपियन बनने के लिए होलिस्टिक डेवलपमेंट ऑफ पर्सनालिटी बहुत जरूरी है। शरीर के साथ-साथ हमें मानसिक और आध्यात्मिक स्तर पर भी चुस्त-दुरूस्त रहना चाहिए। विपरीत परिस्थितियों में हम अपने को तभी सन्तुलित रख सकते हैं जब हमारा मनोबल ऊँचा हो, जो कि राजयोग से ही सम्भव है। उन्होंने कहा कि हमने दुनिया के बारे में जानने की तो अनेक किताबें लिखी हैं लेकिन ऐसा कोई नहीं है जिसने ऐसी किताब लिखी हो, जो कहे कि मैंने अपने को जान लिया।

एशियन मैराथन चैंपियन रह चुकी डा॰ सुनीता गोदारा ने अपने सम्बोधन में कहा कि मैं बहुत समय से कई योगा संस्थाओं से जुड़ी रही जिसके कारण मुझे मैराथन में बहुत मदद मिली। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ में जो राजयोग सिखाया जाता है, वो हमें मानसिक स्तर पर बहुत सकारात्मक बनाता है जिससे हमारे शरीर में भी वो ऊर्जा कार्य करने लग जाती है। राजयोग से हम स्वयं को समझते हैं, हमें अपनी क्षमताओं की पहचान मिलती है। उन्होंने कहा कि हमारे अन्दर हमेशा सीखने की भावना होनी चाहिए।

ओआरसी की निदेशिका बी के आशा दीदी ने अपने प्रेरणादाई विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हम जो भी कार्य करें उसे समर्पण भाव के साथ करें। किसी भी कार्य के प्रति प्रेम और सम्मान भाव हमें स्वत: ही सफ्लता की ओर ले जाता है। उन्होंने कहा कि तूफान को तूफान नहीं बल्कि तोहफा समझें। अपने को श्रेष्ठ बनाएं रखने के लिए मन को शुद्ध एवं निर्मल रखना आवश्यक है। हमारे अन्दर सदा दूसरों को देने की भावना हो। जीवन में निरन्तर अभ्यास ही हमें सफ्ल बनाता है।

ब्रह्माकुमारीज़ स्पोर्टस् विंग माउन्ट आबू के संयोजक बी के जगबीर ने कहा कि वर्तमान समय संस्था के द्वारा स्पोर्टस् के क्षेत्र में अद्वितीय सेवायें हो रही हैं। उन्होंने कहा कि मैं समय प्रति समय कई खेल अकादमियों में जाता रहता हूँ, जहाँ पर मोटिवेशन के लिए हम माइंड बॉडी ट्रेनिंग देते हैं। राजयोग के द्वारा अनेक खिलाड़ियों के प्रदर्शन में उत्कृष्टता आई है। उन्होंने कहा कि मैने भारतीय वायुसेना में भी अपनी सेवायें दी हैं और मैं स्पोर्टस् के क्षेत्र से भी जुड़ा रहा, मुझे लगातार पांच बार बॉक्सिंग में गोल्ड मेडल मिल चुका है।

एशियन गेम्स् में दो बार के स्वर्ण पदक विजेता हरीशचन्द्र ने भी अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि मैं 25 वर्षों से निरन्तर राजयोग का अभ्यास कर रहा हूँ। अगर हमें अच्छा स्सोर्ट पर्सन बनना है तो जीवन में सदा ईमानदारी एवं सच्चाई का होना बहुत आवश्यक है, जिसके लिए आध्यात्मिक शिक्षा जरूरी है।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्तर के अनेक जाने-माने खिलाड़ियों सहित 250 से भी अधिक स्पोर्टस् पर्सन्स ने शिरकत की। कार्यक्रम का संचालन ओआरसी की राजयोग प्रशिक्षिका बी के हुसैन बहन ने किया।